International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 2; March 2017; Page No. 173-176

मृच्धकटिक कालीन समाज में स्त्री–दशा

डॉ0 पल्लवी सिंह

वरिष्ठ प्रवक्ता (संस्कृत), के0आर0 महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मथुरा, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

कालिदास के पूर्ववर्तीय नाटककारों में शूद्रक का विश्व स्तरीय नाटक, मृच्छकटिकं सहजतः हमारा ध्यान आकृष्ट करता है। संस्कृत के विस्तृत एवं विकसित नाट्य–साहित्य में इस नाटक का अपना अप्रतिम स्थान है। यह एक प्रकरण है, इसमें प्रारम्भ में नाटककार शूद्रक के विषय में प्रस्तावना से अन्यत्र कोई जानकारी नहीं मिलती है। वामनाचार्य ने अपनी "काव्यालंकार सूत्रवृति" में "शूद्रकादिरचितेषु प्रबन्धेषु" शूद्रक विरचित प्रबन्धों का उल्लेख किया है तथा वहां ''द्युतं हि नाम पुरूषस्य अहिंसासन राज्यम्' इस ''मृच्छकटिकम्'' के द्यूत प्रशंसा परक वाक्य को उद्धृत भी किया है, जिससे हम कह सकते हैं कि आठवीं शताब्दी के पहले ही मृच्छकटिकम् की रचना की गई होगी। वामन के पूर्ववर्ती आचार्य दण्डी ने भी ''काव्यादर्श'' में ''लिम्पतीव तमोङ्गानि'' मृच्छकटिकम् के पद्यांश को अलंकार निरूपण करते समय उदधृत किया। इस आधार पर शूद्रक का समय सप्तम् शती माना गया है। कुछ विद्वानों का विश्वास है कि शूद्रक नामक कोई व्यक्ति नही है वरन कवि ने अपना नाम न देकर शूद्रक का नाम इस कृति से जोड़कर तटस्थ रूप में ही समाज एवं राज्य की प्रतिक्रियाओं एवं परिवर्तनों का अध्ययन करना चाहा है। यह ऐसी स्थिति में स्वाभाविक एवं आवश्यक ही था। सुधारवादी और परिवर्तनशील व्यक्ति समाज में सामने ऐसे नही आते है। यद्यपि पद्मपुराण में शूद्रक नामक राजा का उल्लेख है। इन्हें इस नाटक का रचयिता माना है। वस्तुतः यह प्रथम नाटक है जो हमारे जीवन से अपना सान्निध्य दिखाता है और इसके पात्र वस्तुतः आधुनिक समय में भी सच्चे प्रतीत होते है। शूद्रक का काल निर्धारण मृच्छकटिकम् नाटक में स्त्री पात्रों के अध्ययन में बाधक नहीं होता है। ये स्त्री–पात्र तत्कालीन समाज के गूढ़ तथ्यों को उजागर करने एवं सार्थक चित्रण में सहायक सिद्ध होते है।

मृच्छकटिकम् संस्कृत साहित्य के अनन्यतम रूपकों में से एक है। लोक कथानक पर आश्रित होने के कारण इसकी लोकप्रियता प्राचीन काल से है। इसमें तत्कालीन समाज का यथार्थ चित्रण है। इसमें उच्च मध्यवर्ग के ब्राह्मण युवा को नायक के रूप में प्रस्तुत किया गया है, नायिका गणिका वसंतसेना है, साथ ही राजनीतिक सत्यता का पटाक्षेप पहली बार इस नाटक में होता है। इसके पात्र वास्तविकता के जीवंत उदाहरण है और सहजतः आधुनिक समाज का प्रतिनिधित्व करते है। इसमें समाज के साधारण वर्ग के लोगों के दैनिक जीवन का सही निरूपण किया गया है।

स्त्री हमेशा से सामाजिक प्रगति का द्योतक रही है। अतः किसी भी समाज की प्रगति और उसका सही चित्रण उसके मूल्यांकन में अन्तर्निहित है। मृच्छकटिकम् नाटक भी नायिका है, वसंत सेना यह गणिका की श्रेणी में आती है। इस समय वेश्या प्रथा अधिक प्रचलित था। राजा के साले से लेकर संवाहक जैसा जुआरी भी वेश्यालय जाने और वेश्या के मोह पाश से अलग नहीं नजर आता है। यहाँ तक की नायक चारूदत्त भी गणिका वसंतसेना से प्रेम करने लगता है। वेश्या के दो भेद है– गणिका और वेश्या। गणिकाये संगीत आदि के माध्यम से लोगों को खुश करके धन अर्जित करती थी। उसके पास अतुल वैभव था। इस प्रकार ये गणिकाएं वैभव विलासपूर्ण जीवन व्यतीत करती थी। वसंतसेना के महल की शोभा को देख विदुषक विस्मृत हो जाता है।[1] धन सम्पन्न ये विशेष रूप से मात्र परम्परावश इस कार्य को करती थी। वसंत सेना की माँ भी इस कार्य में संलग्न है।

वेश्या से सम्बन्ध रखना साधारण था परन्तु समाज में मान्य नहीं था। इसलिए शर्विलक उनकी निन्दा करता है।[2] वह मदनिका से प्रेम करता है परन्तु अपने इस कृत्य पर स्वयं लज्जा अनुभव करता है। वह कहता है कि सदाचारी पुरूषों के कुल में पैदा हुआ भी मैं प्रेम के अधीन होकर ऐसा कुकर्म करता हूँ। कामदेव के प्रभाव के कारण गुणहीन होकर भी सम्मान की रक्षा करता हूँ। उसका मानना है कि वेश्या पुरूषों को धन के लोभ से वशीभूत कर उन्हें निर्धन बना देती है अर्थात् इनके प्रेमासक्त पुरूष सामाजिक प्रतिष्ठा से विरक्त हो जाता है। इस प्रकार समाज में वेश्याओं को नीच मानते थे। वेश्याओं के चरित्र के विषय में लोगों की धारणा अच्छी नही थी। उन्हें कभी भी सद्चरित्र नहीं माना जाता था। शर्विलक कहता भी है कि "बोए हुए जौ से धान नहीं हो सकते है।" इसी प्रकार वेश्या के घर में पैदा हुई स्त्रियां पवित्र नहीं होती है।[3] न्यायालय में पूछे जाने पर चारूदत्त, वसन्तसेना के साथ अपना सम्बन्ध बताने में संकोच अनुभव करता है।[4] इस प्रकार चारूदत्त जैसा सज्जन भी सार्वजनिक रूप से एक गणिका से अपने सम्बन्ध को छुपाता है। परन्तु समाज में वेश्याओं एवं गणिकाओं से सम्बन्ध रखने वालों की कमी नही थी।

विधवा नारी या जो स्त्री संयम का आचरण करने में असमर्थ रहती थी अथवा आर्थिक उपार्जन संगीत, नृत्य से करती थी वो गणिका वर्ग की संख्या में वृद्धि करती थी। समाज में नारी के प्रति कठोरता ने भी गणिकाओं की संख्या में वृद्धि की। यह सार्वजनिक स्त्रियों का बहुत बड़ा समुदाय था और सामाजिक दृष्टि से यह सम्प्रदाय हीन और गिरे स्तर का माना जाता था। विदूषक ने चारूदत्त के हितवर्द्धन के लिए कहा कि वह इसलिए गणिका का साथ छोड़ दे क्योंकि वह जूते की कील के समान कष्टदायी है।[5] वैसे गणिकाओं के विषय में यह प्रसिद्ध था कि ये सौन्दर्य पाश में बाँध कर दूसरों का जीवन नष्ट करती है। कुलीन शील वाले व्यक्ति गणिका के संसर्ग से बचते थे परन्तु वसंतसेना गणिका कुलीन एवं सदगुणों की खान है। उसके गुणो से आकृष्ट चारूदत्त उसका प्रेमी हो जाता है। वसंतसेना गणिकाओं के आचरण एवं चरित्र से भली–भांति परिचित है तभी तो वह कहती है कि वेश्या यदि स्वार्थहीन प्रेम करती भी है और प्रेमी धनी हो तो इस सत्य पर कोई विश्वास नहीं करेगा। ऐसी परिस्थिति में प्रेमी का निर्धन होना श्रेयस्कर है।[6] यह तथ्य इस बात को उद्घटित करता है कि सामान्यतः गणिकाएँ या वेश्याएँ धनी पुरूष के धन एवं वैभव विलास से आकृष्ट हो उनको वशीभूत होती थी। धन का लाभ उठाना चाहती थीं और उनसे विवाह कर लेती थी।

इन गणिकाओं की आर्थिक स्थिति अतीव वैभवशाली होती थी।

गणिका के भव्य प्रासादो में उपवन, कुन्जों, कूप एवं तड़ाग भी होते थे। इनके पास धन व सवारी भी होती थी। मृच्छकटिक के पंचम अंक में गणिका बसंतसेना के महल का भव्य एवं रम्य वर्णन मिलता है।

गणिकाएँ सुन्दर युवतियाँ थी किन्तु वे अपने को अलंकार वस्त्र–सज्जा से आकर्षक बनाकर रहती थी। विभिन्न कलाओं में निपुण पुरूषों को आकर्षिक करना ही इनकी सफलता थी। वेश्या विशेष रूप से विभिन्न पुरूषों के साथ समागम के लिए प्रसिद्ध थी। ये पर्वो एवं संस्कारों पर गाने नाचने के साथ धन कमाने को अनेक प्रपंच वाली कला जाननी थी। वसन्तसेना स्वयं कहती है कि बहुत से पुरूषों का साथ होने के कारण वेश्याओं का स्वभाव चतुर होता है।[7]

गणिकाओं की परम्परा चलती थी। वसंतसेना स्वभावतः अपनी माता से भिन्न है परन्तु वसंतसेना की माँ, शकार राजा के साले को स्वर्ण मुद्राओं के बदले अपनी पुत्री समर्पित करने को तैयार है।[8] चेटी वसंतसेना से कहती है कि माँ की आज्ञा है कि आप राजा के साले शकार के रथ पर सवार हो। वसंतसेना सद्चरित है। वसंतसेना वह विशेष रूप से इस तरह का कार्य नहीं करती थी। वह माता की आज्ञा का उल्लंघन कर यह कहती है कि उसे यदि माँ जीवित देखना चाहती है तो कभी भी उसे इस प्रकार की आज्ञा नहीं देंगी।[9] वसंतसेना के कुलीन गुणों पर ही दरिद्र चारूदत्त आकृष्ट है।

सामान्यतः गणिकाओं से व्यक्तियों का आचरण अनुचित रहता था। ये भोग–विलास की वस्तु समझी जाती थीं इस प्रकार शकार, विट और चेट सभी खुले रूप से प्रेम–प्रदर्शन करते है। शकार जैसा भ्रष्ट राजा का साला नीति रक्षक होकर भी भक्षक का कार्य करता है। वह कामुक व्यक्ति खुलेआम वसंतसेना को प्रताड़ित करता है। मार्ग पर चलती हुई उससे जाती हुई, विट, चेट आदि भी अनुचित कहने से नहीं कतराते है और उसका पीछा करते है। उनके कटाक्षपूर्ण एवं तिरस्कारपूर्ण शब्दों को वसंतसेना सहती है।[10]

राजपरिवार के पुरूषों पर कोई सामाजिक प्रतिबंध नहीं था, वो चाहे तो किसी से भी सम्बन्ध रख सकते थे। वेश्याओं से प्रेम संबंध तथा राह चलते मुक्त प्रणय निवेदन यह उनकी स्वाभाविक प्रवृत्ति थी। राजा का साला राजा की रखैल स्त्री का भाई है जो स्वयं एक वेश्या का पुत्र है। इसी प्रकार शर्विलक और चारूदत्त जैसे कुछ साहसी युवक सामाजिक मान्यताओं और प्रतिबन्धों को तोड़ कर इन गणिकाओं से विवाह करते थे। शर्विलक ने मदनिका को वधु बनाया और चारूदत्त के लिए राजा आर्यक ने वसन्त सेना को वधू बनाकर यह सिद्ध किया है।[11]

समाज में भोग विलास का प्रचलन था। इस कारण साधारणतः जनमानस कामुकता एवं भोगविलास में जीवन व्यतीत करते थे। स्त्रियों की अस्मिता सुरक्षित नही थीं। रात्रि वेला में नगर में स्वच्छन्द विहारा करना उनके लिए सुरक्षित नहीं था। राजा के दुराचारी होने से उनका साला शकार निरंकुश सा सर्वत्र अपना प्रकोप फैलाये था। शकार वसंतसेना से बलात् प्रेम प्रदर्शन करता है। वसंतसेना के प्रति शकार की अनुचित चाल उनकी उदण्डता को प्रदर्शित करती है। वह चाहकर भी वसंतसेना का प्रेम नहीं पा सकता पर यह सहजतः देखा जा सकता है कि समाज में गणिकाओं की स्थिति दयनीय थी, स्त्रियों को कमजोर समझा जाता था। उनके अस्मिता पर प्रश्नचिन्ह लगा हुआ था। वो सहज जीवन व्यतीत नही कर सकती थी। यहाँ तक की गणिकाओं के लिए अशिष्ट शब्दों का व्यवहार होता था। अपने सहयोगियों के साथ शकार अपरिष्कृत शब्दों में प्रणय निवेदन करता है, परन्तु उसकी नीचता की सीमा नहीं रही जब वह अपनी प्रेयसी वसंतसेना को अनुचित शब्दों से सम्बोधित करते नहीं थकता है। शकार द्वारा पीछा की जाती हुई वसंतसेना चेटी आदि से अलग होकर जाती है, अपने स्त्री होने और कमजोर होने का एहसास उसे उस समय होता है। सामाजिक असुरक्षा के कारण उसके मुख से अनायास निकल पड़ता है कि मुझे स्वयं ही अपनी रक्षा करनी चाहिए।[12]

शकार गणिकाओं की सही स्थिति से हमें अवगत करवाता है। वेश्यालय में इनका जीवन व्यतीत होता और ये साधारणतः युवकों की सहायता से जीवन व्यतीत करती थी। उन्हें मार्ग में उत्पन्न लता के समान समझा जाता, बाजार में बेंची जाने वाली वस्तु के समान, उनका रूप यौवन ही उनके जीविकोपार्जन का सहारा था।[13]

इस प्रकार वृद्धावस्था में उनकी स्थिति दयनीय होती थी। इनका संसर्ग सभी वर्गो के पुरूषों से होता था। इन्हें दासी पुत्री समझा जाता और समाज में हेय दृष्टि से देखा जाता था। सामाजिक उन पर विश्वास नहीं करते थे और सबों की मान्यता थी कि सामान्यतः ये धन के लिए ही सम्बन्ध स्थापित करती थी पुरूषों को वशीभूत कर अपने प्रेम का विश्वास दिलाती परन्तु उन पर विश्वास नहीं करती थी। ये विश्वासपात्र भी नहीं होती थी। इस प्रकार लोगों की मान्यता थी कि इनका साथ न हो तो अच्छा और शमशान के फूल की भाँति इनका परित्याग आवश्यक है।[14]

इस युग में दास प्रथा और बंधक प्रथा का प्रचलन था। सम्पन्न परिवारों एवं कलीन राजघरानों में दासियां सेवा कार्य करती थी। वे गरीबी और भूख के कारण दासी बनती थी। युवतियाँ भी दासी बन जाती थी। कभी दासियाँ खरीदी भी जाती थी और कुछ दासियाँ विरासत में मिलती थी। घरेलु कार्य के अतिरिक्त निवास में निजी सेवा–श्रुधा के लिए ये दासियाँ रखी जाती थी। मदनिका जो वसंतसेना की दासी है और रदनिका जो चारूदत्त की दासी है गृहकार्य में संलग्न रहती है। ये घर का एक–एक काम करती है और साथ ही साथ अपने स्वामियों की सही सलाहकार भी हैं। वसंतसेना को धन वैभव की कमी नही उसके इस वैभव विलास में चार–चाँद लगाने का कार्य ये दासियाँ करती है। इन दासियों को खरीदा बेचा जाता था। शार्विलक मदनिका से प्रेम करता है। उसकी दासत्व से मुक्ति को ध्यान में रख ही वह धन चोरी करता है।[15] एक निर्धन होने के कारण उसे अपने प्रेम की सफलता में संदेह है उसे इस बात का विश्वास है कि उपयुक्त धन देकर ही वह उसे दासत्व से छुड़ा सकता है। वसंतसेना भी मदनिका के इस प्रणय प्रसंग से विदित है। वह शर्विलक से मदनिका को बात करता देख यह अनुमान लगाती है कि मदनिका को यही पुरूष मुक्त करवायेगा। वसंतसेना गणिका होकर भी यह चाहती है कि गणिकाओं को समाज में वधु का स्थान प्राप्त हो और वो सम्माननीय स्थान को प्राप्त करें। मदनिका के द्वारा अपने शर्विलक से प्रेम की बात कहने पर वह सहर्ष उसे मुक्त करने को तैयार है। वस्तुतः ये बातें इस बात की पुष्टि करती है कि दासत्व था और स्त्रियों तथा पुरूषों की खरीद बिकरी होती थी। शकार का स्थावरक चेट भी दास है। उसे दासत्व से मुक्त किया जाता है। दासी गणिकाओं का सम्बन्ध पुरूषों से होता था परन्तु ये किसी की पत्नी के रूप में सम्मानित नहीं होती थी। जब शर्विलक मदनिका को अपनी पत्नी बनाता है और वसंतसेना उसे सहजतः आर्शीवाद देती है, वह कहती है आज तुम पूजनीय हो गयी।[16] शर्विलक वसंत सेना के इस उदार कर्तव्य की भूरि–भूरि प्रशंसा करता है क्योंकि उसी की कृपा से मदनिका एक वेश्या की दासी से आज वधु के सम्माननीय पद की अधिकारिणी बनी है। आज तुम, मरमिका वसंतसेना की कृपा से खुले रूप में रहनेवाली[17] वेश्या से दुर्लभ वधू शब्द रूपी घूंघट पाया है। इस प्रकार सहजत' यह जाना जा सकता है कि महिला श्रमिक या दासी की स्थिति अपने स्वामी के व्यवहार पर ही निर्भर थी। मृच्छकटिकम् में यह बात प्रमाणित होती है। रदनिका चाहकर भी चारूदत्त को छोड़ना नहीं चाहती है इसका प्रमुख कारण है चारूदत्त की व्यावहारिक कुशलता।

रदनिका सहजतेः वसंतसेना द्वारा दासत्व से मुक्त की जाती है। स्थावर शकार का दास है और रदिनिका की स्वामिनी है, वसंत सेना। वसंत सेना मदनिका को मित्रवत् रखती है। विदा करते वक्त उसे सलाह देती है कि कभी कभार मुझे स्मरण कर लेना। उसे प्रेम स्वतंत्र भी कर देती है।

इस युग में सामान्यतः पुरूष द्वारा विवादित स्त्री को घरों में आदर प्राप्त था वही सम्मान एवं पूजा की अधिकारिणी मानी जाती थी। गृह स्थाश्रम की श्रेष्ठता के कारण पत्नी का महत्वपूर्ण स्थान था। विधिवेश्याओं ने पुरूष को सभी पूर्ण माना जब वह ''स्त्री स्वदेह और सन्तान'' तीनों का एकीकृत रूप होता था। एक पत्नी प्रथा को समाज में आदर्श माना गया था। चारूदत्त को एक ही पत्नी है घूता। वह घूता से प्रेम करता है और उसकी निष्ठा एक सदाचरण में उसे विश्वास है। घूता के लिए पति सम्मान ही सर्वोपरि है। जब वेश्या वसंत सेना का धरोहर गहना चारूदत्त के घर से चोरी हो जाता है तो घूता इसे जानकर दुःखी होती है। वह व्यग्र है कि चारूदत्त का चरित्र कलिंकित हो गया है। अच्छा तो यही रहता कि उसका शरीर घायल हो जाता परन्तु इस प्रकार कलंकित होना अच्छा नही है। पत्नी के कर्तव्य का निर्वहन करने वाली घूता चारूदत्त की प्रगति एवं कल्याण की प्रार्थना करती है।[18] वह सहर्ष एकमात्र रत्नावली चारूदत्त को समर्पित कर देती है कि इसे वसंतसेना को दे, अपने चरित्र की रक्षा करें। समाज में पति का अनुकरण एवं उसका अनुसरण करने वाली स्त्री को ही मान्यता प्राप्त थी। घूता के कौशल एवं पत्नी परायण व्यवहार सहजतः चारूदत्त द्वारा सराहनीय है। वह स्वीकारता है कि यह मेरा भाग्य है कि मेरी पत्नी मेरे धन के अनुसार चलने वाली है।[19] चारूदत्त घूता के प्रति समर्पित है। पर स्त्री स्पर्श से भी दूर भागता है।[20] इस प्रकार सज्जन पुरूष एक स्त्री से सम्बन्ध रखते थे। उनका यह धर्मनिष्ठ आचरण होता कि वो अपनी पत्नी के प्रति समर्पित हो। पत्नी के कर्तव्यों का वर्णन किया गया है कि पत्नी पति के अनुकूल धर्माचरण करे गुरूजनों का आदर करे घर की वस्तुएं ठीक प्रकार से रखे कम व्यय करे, अविचार न करे, पराये घर न जाए और पति की सेवा करे। शर्विलक मदनिका से विवाहोपरान्त इस बात को लेकर चिन्तित है कि मेरे रहते आयंक बंदी बना लिया गया है। मुझे अपने मित्र की रक्षा करनी चाहिए। इस प्रकार विचार कर वह मदनिका से मदनिका सहजतः कहती है कि यदि उसके कारण शर्विलक के कार्य में विघ्न पड़ रहा है तो वह उसे उसके माता पिता एवं गुरूजनों के पास छोड़ दे। वधू का कर्तव्य पतिगृह में बड़ा भी सेवा करना भी था।[21]

यद्यपि घूता चारूदत्त के प्रति पूर्णतया समर्पित है और चारूदत्त पर स्त्री स्पर्श से भी परहेज करता है परन्तु वह गणिका वसंतसेना से प्रणय करता है। पुरूषों के बहुत से स्त्रियों से सम्बन्ध हुआ करते थे और वह अन्य स्त्री से सम्बन्ध रखने में संकोच नही करता। प्रत्यक्षतः न होकर परोक्ष रूप से उनके स्त्रियों से सम्बन्ध हुआ करते थे। घूता वेश्या संसर्गा पति और वेश्या दोनों को स्वाभाविक रीति से महत्व देती है। वसंत सेना के प्रति चारूदत्त की विशेष आशक्ति जानकर भी घूता इस बात को नही उजागर करती और न ही काई कलेश मन में रखती है। वह सत धर्म चारिणो का कर्त्तव्य निर्वहन करती है। चरित्र ही उसके लिए महत्वपूर्ण है। इस प्रकार यह वह समय था जब स्त्री की अपनी अस्मिता थी और उसका अपना आत्म सम्मान था। चारूदत्त का मित्र मैत्रेय घूता भी प्रशंसा करता है कि मित्र चारूदत्त, अछा है कि तुमने अपने अनुकूल एवं अनुरूप पत्नी को पाया है।[22] वसंतसेना को अपनी रत्नावली देते हुए वह उदार दया नारी का चरित्र दर्शाती है।

वसंत सेना के वापस करने पर वह कहती है कि यह मेरे पति नेदिया है। अतः मेरे द्वारा लिया जाना सही नही है और इससे भी प्रमुख यह है कि तुम्हें यह जानना चाहिए कि मेरे पति ही मेरे आभूषण है। मैत्रेय सहजतः अपने स्वामी की पत्नी के लिए आदर रखता है, वहीं वसंतसेना की वह आलोचना करता है और मित्र चारूदत्त को उससे अलग रहने को कहता है।

तदयुगीन समाज में पर्दा प्रथा प्रचलित नही थी। इसलिए दशम अंक में घूता जो चारूदत्त की विवाहित थी जनसाधारण में सामने बिना किसी घूंघट के आती है। वसन्त सेना द्वारा वधू बनाई गई मदनिका भी पर्दा नही करती है। वसंत सेना को घूंघट दिया जाता है, वह सम्मान स्वरूप है। यह राजा द्वारा शर्विलक की तरफ से वसंतसेना को दिया जाता है। वस्तुतः यह पर्दा उसके लिए वैश्या से मुक्ति और कुल वधू के सम्मान स्वरूप है। ये उसे उच्च कुलीन स्त्री का दर्जा देती है। इस प्रकार कुलीन एवं उच्च वर्गीय स्त्रियां सम्मान स्वरूप घूंघट का प्रयोग करती थी। घूंघट पर्दा के एक प्रतिबन्ध नहीं था मात्र इस सम्मान स्वरूप प्रयोग किया जाता था वरन पर्दा प्रथा प्रचलित नही था। मदनिका और वसंत सेना वधू बन भी पर्दा नही करती।

यद्यपि सती प्रथा का स्पष्ट उल्लेख नही मिलता परन्तु इसका संकेत मात्र है। घूता जब चारूदत्त के वध की बात सुनीती है तो सहजतः पतिविहीन जीवन की कल्पना भी नही कर पाती है। वह आत्मदाह को उदत्त होती है। यद्यपि कह इसके परिणाम और इसका समर्थन नहीं करती है। वह इससे भिज्ञ है कि सती बनना या आत्मदाह करना एक प्रकार से पाप है। परिस्थिति वश पति के विषय में अपमान जनक सुनने से अच्छा, उसे आत्म दाह लगता है। वसंतसेना की माता भी एक आदर्श महिला प्रतीत होती है। वसंतसेना के लिए शकार धन भेजा जाता है। यद्यपि वह चाहती तो वसंतसेना को बलात शकार से मिलने के लिए बल डालती परन्तु वह ऐसा नही करती। वह पुत्री वसंतसेना के विचारों का समर्थन करती है। वह एक वृद्ध गणिका है और इस कार्य में निपुण है पर सहजतः माना जा सकता है कि यदि उसे एक कुलीन स्त्री का जीवन व्यतीत करने मिले तो वह सहर्ष इस कार्य को स्वीकारती है। वसंत सेना चारूदत्त द्वारा मार डाली गयी यह जानकर भी वह चारूदत्त को बचाने का हर संभव प्रयास करती है। ये सभी घटनाएं हमें इस बात को सोचने को बाध्य करती है कि यदि उसे सही अवसर मिले तो वह एक आदर्श प्रस्तुत कर सदचरित्र नारी का जीवन व्यतीत कर सकती है।

इस प्रकार हम इस निष्कर्ष पर आते है कि न तो नारी उस समय उन्मुक्त थी और न ही पूरी तरह विधि के बेडियों से जकड़ी थी। वैदिक युग से अलग यहां स्त्रियों का शोषण होना प्रारम्भ था। बहु विवाह यद्यपि अप्रचलित था पर साधारणतः पुरूष अनेक स्त्रियों से सम्बन्ध रखते थे। नायक चारूदत्त घूता को अतीव स्नेह करता है। पर वह मानता है कि यौवन से मदमत्त वह वसंतसेना को प्रेम कर बैठा। अतः यौवन ही इसका उत्तरदायी है न कि उसका चरित्र।[23] इस युग में साधारणतः स्त्रियों का स्तर गिरता जा रहा था जिसकी रक्षा के लिए वो सतत् प्रयत्न शील थी। पराहनिहिर जैसे कानूनविद् इसकी रक्षा में प्रयत्न शील थे। समय के साथ कुरीतियों ने समाज में स्थान ले लिया था जुआ, चोरी, खुलेआम बलातकार एवं स्त्रियों से छेड़खानी सामाजिक पतन का द्योतक है। इस प्रकार नारी यहां अपने पैरो को जमाये रखना चाहती थी परन्तु धीरे धीरे पैरो तले बालूको राशी फिसलती नजर आती है। मृच्छकटिकम् नाटक वास्तविकता को परखता एक सार्थक नाटक है। शूद्रक समाज का सजीव चित्र अंकित करते है। जिसे सही अंक में उस वक्त का प्रतिनिधित्व करता कथानक माना जा सकता है। एक तरफ जहां गणिकाएं है वही दूसरी ओर पूजनीया पत्नी घूता है, जहां एक ओर मदनिका दासी है तो वसंत सेना भी माता भी है। ये सभी पात्र अलग–अलग क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व का समाज को सही अर्थ में प्रति विभक्त करती है।

सन्दर्भ सूची

1. विदूषक– किं वातद्गणिकागृहम् अथवा कुबेर भवन परिच्छेद इति। चतुर्थ अंक, पृष्ठ 306।
2. इह सर्वस्व कलिनः कुलपुत्रमहाद्रुमाः। निष्फलत्पमलं यान्ति वेश्या विहगमक्षिताः।। मृच्छकटिकम्, चतुर्थ अंक, 10।
3. यवाः प्रकीर्णा न भवन्ति शालयो। न वेषजाताः शुचयस्तथागनाः।। चतुर्थ अंक, 17।
4. चारूदत्त– भो अधिकृताः। मया कथमीदृषं वक्तुव्यं यथा गणिका मम मित्रमिति। अथवा यौवनमत्रापराघाति न चरित्रम्। नवमा, मृच्छकटिकं पृष्ठ 535।
5. विदूषकः– गणिका नाम पादुकान्तर प्रविष्टेव लेष्टुका दुःखेन पुनर्निषक्रियते। मृच्छकटिक अंक 5, पृष्ठ 324।
6. वसन्तसेना– अत एव काम्यते। दरिद्र पुरूषसंक्रान्तसनाः खलु गणिका लोकेऽवचनीया भवति। मृच्छकटिकम् वसंतसेना उक्त– द्वितीय, पृष्ठ 124।
7. वसन्तसेना– चेटि नानापुरूषसगेन वेष्याजनोऽलीकदक्षिणो भवति। चतुर्थ अंक, पृष्ठ 237 ।
8. प्रथमा चेटी– आर्ये माताज्ञापयति– गृहीतावत्रुण्ठनं पक्षद्वारे सज्जं प्रवहरणम्। तद्गच्छ् इति। पृष्ठ 238
9. वसन्तसेना– एवं विज्ञापयितव्या– यदि मां जीवन्तीभिच्छसि तदैवं न पुनरहं मात्राऽज्ञापयितव्या। पृष्ठ 239।
10. कामेन दइयते खलु में इदमं तपस्वि अंगारराषि पतितमिव मांसखण्डम्। प्रथम अंक।
11. शर्विलक– आर्ये वसन्तसेने। परितुष्टो राजा भवतीं वधूषब्देनानुगृणाति। दषम अंक, पृष्ठ 739।
12. वसन्तसेना– हा धिक हा धिक्ः कथं परिजनोऽपि परिभ्रष्टः। अत्र मयात्मा स्वयमैव रवितव्यः। प्रथम अंक पृष्ठ 57।
13. तरूणजनसहायष्चिन्त्यतां वेषवासो विगणय गणिका त्वं मार्ग जाता लतैव वहसि हि धनहार्य पुण्यभूत शरीरं सममुपचर भद्रे। सुप्रियं वाप्रियं वा। 31 प्रथम अंक पृष्ठ 62 ।
14. एता इसन्ति च रूदन्ति च वित्तहेतोविष्वासयन्ति पुरूषं न तु विष्वसन्ति। तस्मान्नरेण कुलषीलसमन्वितेन वेष्याः शमषानसुमना इव वर्जनीयाः।। 14 चतुर्थ अंक।
15. शर्विलकः– मदनिके। किं वसन्तसेने मोक्ष्यति त्वां निश्पायेण मृच्छकटिक, चतुर्थ अंक पृष्ठ 247।
16. संतसेना– सांप्रतं त्वमेव वन्दनीया संवृत्ता। तद्गच्छ आरोह प्रवहणम्। स्मरसि माम्। चतुर्थ अंक पृष्ठ 277।
17. यत्र ते दुर्लभं प्राप्तं वधूषब्दावगुण्ठनम्।। 24 चतुर्थ अंक।
18. वधूः– वरमिदानीं स शरीरेण परिक्षतः, न पुनष्चारित्रयेण। तृतीय अंक पृष्ठ 226।
19. चारूदत्त– विभावानुगता मार्या– तृतीय अंक पृष्ठ 235।
20. आविज्ञातावसक्सतेन दुषिता मम वासमा। चारूदत्त 106 प्रथम अंक।
21. मदनिका– एवं विदम्। तत्परं नयतु मामार्यपुत्रः समीपं गुरूजननानाम्। चतुर्थ अंकि पृष्ठ 280।
22. विदूष्क– मोद्। यत्ते सदृषदारसंग्रहस्यत फलम्। मृच्छकटिक तृतीय अंक।
23. चारूदत्त– मो अधिकृताः मया कथमीदृषं वक्तव्यम् यथा गणिका मम मित्रमिति। अथवा यौवनमत्रापराध्यति न चरित्रयम्। मृच्छकटिक अंक– नौ।